आर. एन. आई. नं. : RJHIN16694

पोस्टल रजि. नं.

पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन – प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 01 अंक : 03 बीकानेर, नवम्बर, 2013 मूल्य : 2 रूपये

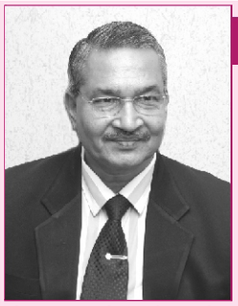

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

कुलपति का संदेश

पशुओं का आपदा प्रबंधन समय की मांग .....

''जीओ और जीने दो'' हमारी संस्कृति का मूल मंत्र है। पशुओं को भी जीने का उतना ही अधिकार है जितना मनुष्य जाति को है। जीवों के प्रति करूणा, दया और सेवा का भाव भारतीय जन मानस के पटल पर अमिट है। बढ़ती आबादी, शहरीकरण और घटते जंगल और चारागाहों के कारण पशु – पक्षियों की रहवाईश और सुरक्षा को लेकर चिंतित होना स्वाभाविक है। प्राकृतिक आपदाओं, पशुओं में महामारी, कोहरा, तापघात और सड़क दुर्घटनाओं के कारण अकाल मौत के मुँह में जाने वाले पशुओं की सुरक्षा और बचाव करना हमारी अहम् जिम्मेदारी है। वेटरनरी विश्वविद्यालय बीकानेर ने अपनी जिम्मेदारी को महसूस कर पहल करते हुए देश के वेटरनरी विश्वविद्यालयों के अंतर्गत पहला पशु आपदा प्रबंधन केन्द्र स्थापित किया है। अब तक केन्द्र ने पशु आपदा प्रबंधन पर राष्ट्रीय स्तर की सेमीनार और कार्यशालाओं का सफलतापूर्वक आयोजन करके इस विषय पर चिंतन और पशुओं के सुरक्षा कार्यो को आगे बढ़ाने का कार्य किया है। इनमें पशुपालकों, पशु चिकित्सा अधिकारियों की भी भागीदारी रही है। राज्य और देश को आपदा प्रबंधन संस्थानों, विशेषज्ञों और पशु चिकित्सा वैज्ञानिकों के साथ सामंजस्य से पशु आपदाओं से निपटने के उपायों, विशेषज्ञ सेवाओं और मानव संसाधन के प्रशिक्षण कार्यो में अपनी सक्रिय भूमिका के लिए विश्वविद्यालय वचनबद्ध है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा भी इसी सोच को आगे रखकर आपदा प्रबंधन को महत्वपूर्ण मानते हुए कार्य योजनाएं बनाई जा रही है। हमारा प्रयास है कि पूरे देश में ऐसी सोच विकसित हो। सबके मिले – जुले प्रयासों से देश में पशु विज्ञान और चिकित्सा में उच्च प्रौद्योगिकी और तकनीकी विकास को एक नई दिशा मिल सकेगी। मैं विश्वविद्यालय के पशु आपदा प्रबंधन केन्द्र के वैज्ञानिकों को बधाई देता हूँ जिनके प्रयासों से तापघात से बचाव व उपचार के लिए बड़े पशुओं का वातानुकूलित आपात अन्तरंग वार्ड शुरू किया गया है। पश्चिमी राजस्थान के ग्रीष्मकाल में 40 डिग्री सेल्सियस तापक्रम पर पशु तापघात के शिकार हो जाते है। इससे पशुओं को राहत मिलेगी। केन्द्र ने अग्निकांडों से पालतु पशुओं के बचाव के लिए भी एक अग्निरक्षक कैटल हट (छपरे) का मॉडल बनाया है। मुझे आशा है कि इस तरह के नवाचार और कार्य पशुधन संपदा को आपदाओं से बचाने के लिए मील का पत्थर साबित होंगे।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

राज्यपाल एवं कुलाधिपति द्वारा वल्लभनगर परिसर का दौरा

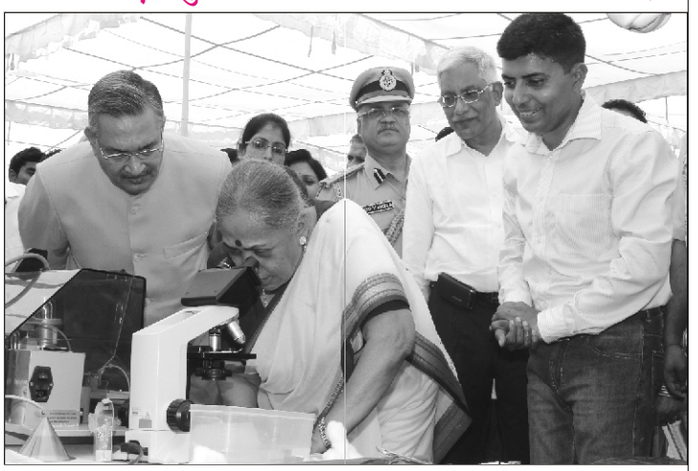

बीकानेर। राज्यपाल और कुलाधिपति श्रीमती मार्ग्रेट आल्वा ने 17 अक्टूबर को वेटरनरी विश्वविद्यालय के वल्लभनगर (उदयपुर) परिसर का दौरा कर वहां चल रही गतिविधियों और कार्यो का निरीक्षण किया। उन्होंने जनजातिय क्षेत्रों मे पशुपालन संबंधी शिक्षा, अनुसंधान एवं प्रशिक्षण के लिए इसे एक महत्वपूर्ण केन्द्र मानते हुए विश्वविद्यालय के अधिकारियों, वैज्ञानिकों व जनजातिय उपक्षेत्र की महिला पशुपालकों से मुलाकात की।

परिसर में उन्होंने गौवंश की गिर परियोजना में देशी नस्ल की गिर गायों पर नस्ल उन्नयन के लिए अब तक किये गये कार्यो की जानकरी बिना जमीन के हाइड्रोपोनिक्स तकनीक द्वारा हरा चारा उत्पादन प्रकिया को देखा तथा 7 दिन में तैयार हरा चारा उत्पादन की तकनीक को सराहा। उन्हें विभिन्न बीजों से हरे चारे उत्पादन की क्षमता की जानकारी दी गई। राज्यपाल ने सजीव पशु जैव विविधता म्यूजियम का अवलोकन किया तथा मुर्गी पालन यूनिट व मछली जलाशय निर्माण की जानकारी प्राप्त की। राज्यपाल महोदया ने मुर्गी की देशी नस्ल प्रताप धन तथा तीव्र वृद्धि दर वाली व्हाईट लैगहार्न मुर्गी नस्ल को देखकर इस क्षेत्र के लिए वरदान बताया। व्हाइट लैगहार्न 6 सप्ताह में डेढ किलों से अधिक वजन प्राप्त कर लेती है। कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने बताया कि वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा जनजाति क्षेत्र में पशुपालन के विकास के प्रयासों से कोई कसर नहीं छोड़ी जा रही है। इस क्षेत्र में पशुचिकित्सा में शिक्षण, अनुसंधान व प्रसार की गतिविधियों को बढावा दिया जा रहा है। इससे जनजातिय क्षेत्र विशेष के लोगों को अपनी आजीविका बढाने में मदद मिल सकेगी। राज्यपाल ने नवनिर्मित कन्या छात्रावास की सुविधाओं की जानकारी प्राप्त की। वेटरनरी विश्वविद्यालय के इस दक्षिण परिसर में पशुपालकों के लिए उपलब्ध चिकित्सकीय सुविधाओं में एक्स–रे, सोनोग्राफी, घोड़ों का अत्याधुनिक ऑपरेशन थियेटर, छोटे व बडे पशुओं के लिए शल्य चिकित्सा सुविधाओं को देखकर राज्यपाल महोदया अभिभूत हुई। इस अवसर पर राज्यपाल ने विश्वविद्यालय के **पशुपालन नए आयाम** हिन्दी मासिक पत्र, हाइड्रोपोनिक्स मशीन द्वारा हरे चारे का उत्पादन, पशु निवारक चिकित्सा पुस्तिका व बकरियों में प्रजनन व्यवस्था व सफल पशु उत्पादन हेतु वरदान खनिज लवण मिश्रण फोल्डर का विमोचन कर वहां आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

अपने विश्वविद्यालय को जानें

वेटरनरी क्लिनिक में उपचार के लिए देश का पहला वातानुकूलित आपात वार्ड शुरू

वेटरनरी विश्वविद्यालय के बीकानेर परिसर में पशु चिकित्सा क्लिनिक में नवसृजित आधुनिक शल्य चिकित्सा सुविधाओं और निःशुल्क ईलाज के कारण प्रतिदिन पूरे संभाग से आने वाले 200 से भी अधिक पशुओं का उपचार किया जा रहा है – **प्रो. टी. के. गहलोत, निदेशक क्लिनिक**

पशुओं की अग्निशामक हट (छपरा)

विश्वविद्यालय के पशु आपदा प्रबंधन केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक प्रो. टी. के. गहलोत ने पशुओं के लिए अग्नि से सुरक्षा वाली हट (छपरे) का एक मॉडल तैयार किया है। इस हट में अग्निशामक एस्बेस्टॉस की छत लगाने के साथ ही आग को बुझाने के लिए पानी के फव्वारे और अग्निशामक यंत्र भी लगे है। वर्तमान में सूखे घास से बने छपरों में मजबूती से बंधे पशुओं को अकाल मौत का शिकार होना पड़ता है। कम लागत और सरल डिजाईन की हट पशुपालकों के लिए अत्यंत उपयोगी साबित हो सकती है।

क्लिनिक में राजुवास ने डीजल फॉर्क ट्रक एक स्वचालित मशीन उपलब्ध करवाई है जिससे 2 टन भार के वजनदार बड़े पशुओं को 9 मीटर तक की ऊँचाई तक ले जा सकती है। इससे बीमार पशुओं को एक से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरित करने में आसानी हो गई है।

डीजल फॉर्क ट्रक

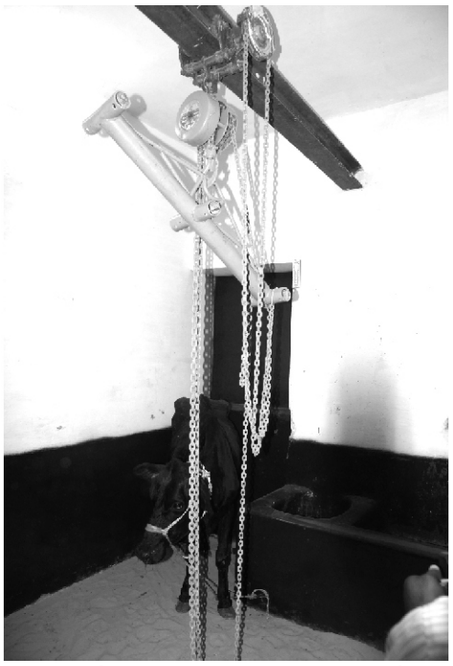

पशुओं का वातानुकूलित आपात वार्ड

विश्वविद्यालय की क्लिनिक में देश का पहला वातानुकूलित आपात वार्ड बना है जिसमें चैनपुली से पशुओं को खड़ा रखा जा सकता है।

बकरी का दूध गुणकारी और रोग प्रतिरोधक है

वैज्ञानिकों को अनुसंधान के दौरान पता चला है कि बकरी का दूध एड्स के मरीजों की प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखने में मददगार होता है। मथुरा स्थित केंन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान (सीआईआरजी) की वार्षिक समीक्षा बैठक में पेश एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है। बकरी का दूध एचआईवी एड्स प्रभावित रोगियों के लिए अत्यंत लाभदायक पाया गया है। कुल नौ महीने तक एड्स के मरीजों पर बकरी के दूध के प्रभाव का अध्ययन किया गया और पाया गया कि बकरी का दूध पीने वाले मरीजों में शुरूआती माह मे ही सीडी 4 काउन्ट्स में उल्लेखनीय प्रगति हुई। उनकी संख्या बढ़ने लगी जो इस एड्स के मरीजों की प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखने के लिए जरूरी होती है। एड्स पीड़ित रोगियों में रोग की प्रतिरोधक क्षमता न्यूनतम स्तर पर पहुंच जाती है। बकरी का दूध उसको बढ़ाने मे कारगर रहता है। बकरी के दूध में अन्य खनिज तत्वों के अलावा सेलेनियम की मात्रा अधिक होती है। अतः दुधारू पशुओं के दूध के मुकाबले बकरी के दूध में मौजूद करीब तीन गुना अधिक सेलेनियम की मात्रा रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने में प्रमुख भूमिका निभाती है। बकरी के दूध में मौजूद वसीय अम्ल ज्यादा आसानी से पचते है। अतः यह उच्च रक्तचाप, मधुमेह, क्षय रोग और कैंसर आदि रोगों के इलाज में भी उपयोगी होता है।

डॉ. खुशबू कनोजिया, स्नात्तकोत्तर शोधार्थी (मो 08764258461)

'हे' -एक पौष्टिक पशु चारा तैयार करने की विधि

मनुष्य और पशु जनसंख्या का भूमि पर अधिक दबाव होने के कारण अन्न व चारा उत्पादन में होड़ लगी रहती है। मनुष्य अपने फायदे के लिए अधिक अन्न उत्पादन लेते है, चारा कम उगाता है। पशु आहार का अकाल बना रहता है। बरसाती मौसम में खरीफ की अधिक उपजाऊ, शीघ्र एवं अधिक बढ़ने वाली फसलें, घासे आदि की अधिकता के कारण पशु आहार में उनका समुचित उपयोग नहीं हो पाता है। ध्यान नहीं देने के कारण यह चारे एवं घास सड़कर नष्ट हो जाता है और बड़ी मात्रा में पशु आहार का नुकसान होता है। यदि ऐसे चारों का **हे** बनाकर उचित संरक्षण किया जाए तो पशु आहार समस्या के समाधान में राहत प्राप्त कर सकते है।

हे क्या है - हे एक शुष्क, स्वादिष्ट, पौष्टिक एवं पाचक घास है जिसमे हरी घास को पहले ही परिपक्व अवस्था में आने से पहले अथवा पुष्पन अवस्था में काटकर सुखाई जाती है। हरी घास की अनुपस्थिति में इसके बिना आवश्यक पौष्टिक तत्वों के ह्रास से संरक्षित घास खिलाकर पशु आहार की पूर्ति की जा सकती है।

हे बनाने के मुख्य सिद्धान्तः- प्राकृतिक एवं कृत्रिम दोनों तरीकों से **हे** बनाने का मुख्य सिद्धान्त घास का निर्जलीकरण से है। हरी घास में पानी की मात्रा बहुत अधिक होती है। जिसके सुखाने को निर्जलीकरण कहते है। सुखाने की गति चारे में उपस्थित पानी की मात्रा, सूखने का तापक्रम, वातावरण की आद्रता, वायु की गति, चारे की किस्म आदि पर निर्भर करती है, कहने का तात्पर्य है कि सुखाने की क्रिया का सम्बन्ध अधिक से अधिक उपस्थित अजल पदार्थों की मात्रा में है।

हे बनाने का उद्देश्यः- घास का अधिक से अधिक निर्जलीकरण करने, आहार में घास की पत्तियों का अधिक समावेश और सूखे घास में अधिक से अधिक हरा रंग रखना है। घास के पोषक तत्वों को नष्ट होने से बचाकर तने को नरम एवं पाचक बनाये रखना। घास मे कम से कम दुष्पचनीय तन्तुओं को रखकर सुगंध और स्वाद को बनाए रखना।

हे बनाने के लिए कटाईः- **हे** बनाने वाली फसलों को पुष्प अवस्था में की काट लेना चाहिये क्योंकि इस अवस्था पर पौधों में केरोटिन, प्रोटीन, पाचक कार्बोहाइड्रेट तथा खनिज लवणों की प्रचुर मात्रा रहती है। फसलों को काटने का सबसे उपयुक्त समय दोपहर का होता है क्योंकि इस समय पौधे में पानी की मात्रा कम होती है। कटी हुई फसल को एकदम सूखी जमीन पर फैलाना चाहिये। फसल पकने से पहले काटने से पत्तियों का गिराव कम होता है एवं काफी स्वादिष्ट व पौष्टिक बनता है। अतः फसल के काटने की अवस्था बड़ा महत्वपूर्ण कदम होता है क्योंकि इसका **हे** के गुणों एवं किस्म पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

हे बनाने की कुछ विधियाँः- हे को चाहे प्राकृतिक ढंग से बनाया जाय अथवा कृत्रिम ढंग से लेकिन कुछ कारक **हे** बनाने में अपना प्रभाव अवश्य डालते है। जैसे सूर्य की रोशनी, औस अथवा बरसात तथा स्थानान्तरण आदि से 20 प्रतिशत खाद्य तत्वों में कमी आ जाती है। यह वातावरण की असामान्य दशाओं के कारण होता है। घास को अधिक तापक्रम पर सुखाने से हानियां होती हैं जैसे – घुलनशील तत्व घुल जाते है, केरोटिन (विटामिन–ए) का ह्रास हो जाता है, खनिज लवणों का ह्रास होता है, पत्तियां गिर जाती है, जो कि बहुत पौष्टिक होती है।

देशी विधियांः- (अ) त्रिपाद विधिः- हे बनाने की इस विधि में बांस, लम्बी लकड़ी या लोहे के लम्बे तथा पतले लट्ठों से एक तिपाई अथवा त्रिपाद बनाई जाती है जिसका ऊपरी सिरा नुकीला बनाया जाता है। इन सिरों को रस्सी या तार से या लोहे के सरियों द्वारा आपस में मिलाते है। तिपाई के बीच की संचित घास में वायु के आने व जाने के लिए कुछ स्थान छोड़ दिया जाता है जिससे घास सूखने में हवा एवं प्रकाश का अधिक से अधिक सम्पर्क मिल सके। तिपाई को पृथ्वी पर रखकर इस पर घास एकत्रित कर देते है। सुखाते समय प्रकाश, वायु तथा ताप आदि के सामान्यरूप से बराबर व लगातार वितरण के लिए लकड़ी के डंडे व चोसंगी की सहायता से पलटते रहते है। यह विधि प्रायः खराब मौसम मे हे बनाने में प्रयोग मे लाई जाती है। **(ब) फार्म बाड़ विधिः-** घास को सुखाने के लिए फार्म या खेत की दीवारों या तारों की बाड़ या कांटेदार झांड़ियों की बाड़ का उपयोग किया जाता है। हरा चारा काटने के बाद चारे को इन्ही बाड़ या दीवार पर टांग देते है और समय समय पर उलटते–पलटते रहते है। इससे घास का अधिकतम सम्पर्क प्रकाश एवं हवा से बना रहे और घास की नमी कम समय मे उड़ जाये। यह घास सुखाने का बड़ा ही सरल व सस्ता तरीका है। **(स) भूमि विधिः-** घास को सुखाने की इस विधि में घास की उचित समय पर कटाई करके शुष्क भूमि पर तहें लगाते है जिसकी मोटाई 9–10 इंच रखते है। घास की इन तहों को मूल अथवा विन्ड्रोज कहते है। घास को धूप में सुखाया जाता है तथा समय–समय पर पलटाई करते रहते है।

हे का संचयः- राजस्थान प्रांत में **हे** का संचय प्रायः ढेरों में अथवा टालों में करते है। हे का संचय करते समय इस बात का ध्यान रखें कि हे में 15–20 प्रतिशत से अधिक नमी न हो अन्यथा यह खाने योग्य नहीं रहेगा। अतः संचय करने से पहले अच्छी तरह से हे को पूर्ण रूप से सुखा लेवें। संचय करने के बाद ध्यान रखें कि यह पानी या नमी के सम्पर्क मे नही आए जिससे अधिक समय तक संचय किया जा सके। इस प्रकार संचय का संग्रह किये हे को कुट्टी या कुत्र बनाकर अपने पशुओं के शरीर भार के 2.5 प्रतिशत के हिसाब से रोजाना 3–4 बार में उन्नत ठाण में खिलाकर समुचित उपयोगी करें।

डॉ. विवेक खंडाईत
डॉ. पी.डी. स्वामी (मो. 09414242755)

पशुओं में ब्रुसेल्लोसिस रोग से बचाव और उपचार

ब्रुसेल्लोसिस पशुओ की एक संक्रामक बीमारी है। इस रोग में गर्भस्थ मादा पशुओं के अंतिम तिमाही में गर्भपात, जेर का अटकना, जोड़ों का दर्द एवं सूजन, बुखार तथा नर पशुओं के वृषण में सूजन आदि लक्षण प्रमुख हैं। इस रोग में मृत्यु दर दो प्रतिशत से भी कम है। इस रोग में मृत्यु का मुख्य कारण हृदय की आंतरिक झिल्ली में सूजन आना है। पशु अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान पहुंचाने वाला यह प्रमुख रोग है। इस रोग के अन्य नाम बैंग्स रोग, संक्रामक गर्भपात, अन्दुलेंट बुखार, माल्टा बुखार तथा मेडिटोरीनियन बुखार है।

कारण – मनुष्यों तथा पशुओं में यह रोग ब्रुसेल्ला नामक जीवाणु से फैलता है। सामान्यतया ब्रुसेल्ला जीवाणु की सभी प्रजातियां अलग – अलग पशु प्रजातियों के लिये विशिष्ट होती हैं जैसे कि गायों तथा भैसों के लिये ब्रुसेल्ला अबोर्टस, भेड़ों में ब्रुसेल्ला ओविस, बकरियों में ब्रुसेल्ला मेलिटेंसिस, सूअरों में ब्रुसेल्ला सुईस, स्वानों में ब्रुसेल्ला केनिस तथा मनुष्यों में ब्रुसेल्ला मेलिटेंसिस इत्यादि प्रमुख हैं।

प्रसारण – यह एक जूनोटिक (मनुष्यों तथा पशुओं मे आदान – प्रदान होने वाला) रोग है जो कि बीमार पशु का कच्चा दूध पीने, कच्चे दूध से बनने वाले अन्य पदार्थ जैसे कि चीज़ (Cheese) के खाने, अधपका मीट खाने, संक्रमित खाना तथा पानी के सेवन से, रोगी पशु के योनी स्त्राव तथा अन्य स्त्रावों के निकट संपर्क में रहने से तथा संक्रमित और दूषित वातावरण से फैलता है। पशुओं में यह रोग रोगवाहकों जैसे कि मक्खी, चीचड़े, चूहों, श्वानों से तथा संक्रमित सांड से गर्भधारण कराने पर भी फैल सकता है। यह रोग पशु व्यवसायिक मनुष्यों जैसे कि प्रयोगशाला में कार्यरत कर्मचारी, पशुचिकित्सक, वधशाला में कार्यरत कर्मचारी तथा पशुओं के निकट संपर्क में रहने वाले व्यक्तियों में भी फैल सकता है।

रोग जनन – इस रोग की अवधि कुछ सप्ताह से महीनों तक और सालों तक भी हो सकती है जो कि जीवाणु की संक्रामक क्षमता और पशु की प्रतिरक्षा पर निर्भर करती है। लैंगिक परिपक्वता पूर्ण होने से पहले पशु ब्रुसेल्ला जीवाणु के लिये कम संवेदनशील होता है परन्तु लैंगिक रूप से परिपक्व होने के पश्चात और गर्भधारण करने के पश्चात पशु पूरी तरह से संवेदनशील हो जाते है। शुरूआत में ये जीवाणु मुखहार, ऊपरी श्वसन तंत्र, नेत्र–श्लेश्मा झिल्ली, कटी हुई त्वचा तथा योनी मार्ग आदि द्वारा स्वस्थ पशु में आसानी से प्रवेश कर जाते है। शरीर में पहुँच कर ये गर्भधारित बच्चेदानी, स्तनग्रंथि, वृषण, लसिका ग्रंथि तथा जोड़ों की तरफ ज्यादा आकर्षित होते है। जीवाणु यहाँ से रक्त में प्रवाहित होकर पूरे शरीर में पहुँच जाते हैं तथा धीरे – धीरे वृद्धि करते रहते हैं, जिससे पशु को बुखार होता है। नर पशुओं में ये वृषण तथा अन्य संभाग में सहायक अंगो की तरफ ज्यादा आकर्षित होते है। गर्भधारित मादा पशुओं के गर्भस्थ शिशु से इरीथ्रोल नामक पदार्थ स्त्रावित होता है जो कि जीवाणु की बहुलीकरण क्षमता को बढ़ाता है। पशु एक बार रोगी होने के पश्चात् हमेशा रोग वाहक का कार्य करता है।

लक्षण – मादा पशु में इस रोग का प्रमुख लक्षण अंतिम तिमाही में गर्भपात होना है। इस रोग में मादा पशु के योनी मार्ग से भूरा सफेद रंग जैसा चिकना पीपदार स्त्राव निकलता है। गर्भपात से पहले रोगी पशु में ब्याने के लक्षण दिखाई देते हैं तथा गर्भपात के बाद ज़ेर अटकना आम समस्या है। लम्बे समय तक ज़ेर अटकने से पशु के गर्भाशय की आंतरिक झिल्ली मे सूजन आ जाती है जो कि बाद में मवाद मे बदल जाती है। रोगी पशु को थनैला रोग होने की संभावना भी रहती है। रोगी पशु के पैरों के जोड़ो मे सूजन हो सकती है जिसे अंग्रेजी भाषा में हाईग्रामा कहते है। नर पशुओं के वृषण में सूजन आ जाती है। संभोग के समय पशु के वीर्य में यह जीवाणु उपस्थित होता है जो कि रोग फैलाने मे सहायक होता है। धीरे – धीरे इस रोग मे नर पशु की संभाग इच्छा कम हो जाती है और पशु बाँझ/बंज़र हो जाता हैं। गाय – भैंस तथा भेड़ – बकरियों में उपरोक्त लक्षण लगभग एक जैसे ही होते हैं परन्तु ये बीमारी की उग्रता पर भी निर्भर करते है। सूअरों मे मुख्य लक्षण गर्भपात तथा कमजोर बच्चों का जन्म देना है। अश्वों में जनन तंत्र का ज्यादा हस्तक्षेप नहीं होता है। इसमे अश्वों के गर्दन पर मोटा फोड़ा हो जाता है जो कि बाद में मवादयुक्त घाव में तब्दील हो जाता है तथा घुटनों पर भी सूजन आ जाती है। मनुष्यों में इस रोग में मुख्यतया ज्यादा पसीना आना, मांस तथा जोड़ों में दर्द, बुखार, तीव्र गति से वजन का कम होना, खून की कमी, कमजोरी, मादा में गर्भपात, सिर में दर्द, थकान का महसूस होना, उदासी आदि लक्षण प्रमुख हैं।

निदान – रोग लक्षणों के आधार पर और **प्रयोगशाला जांच द्वारा** –

(अ) रोगी पशु के स्त्राव, रक्त तथा गर्भपात शिशु के हिस्से से इस जीवाणु को प्रयोगशाला में विशेष तकनीक द्वारा अलग करके पता किया जा सकता हैं।

(ब) प्रयोगशाला में उपयोग होने वाले छोटे जानवरों जैसे कि गिनीपिग के शरीर में इस रोग युक्त स्त्राव तथा अन्य रोगयुक्त पदार्थ को डालकर इस रोग की तीव्रता की जांच की जा सकती है।

(स) पशु के शरीर में प्रतिरक्षी की उपस्थिति भी इस रोग का निदान करने मे सहायक होती हैं। इस विधि में रोगी पशु के रक्त में से सीरम निकालकर उसे ब्रुसेल्ला के प्रतिजन से मिलाते हैं तथा इन दोनों का थक्का बनने पर इस रोग की पुष्टि हो जाती है। लेकिन यह एक निश्चितता वाली जांच नहीं है क्योंकि रोग होने के पश्चात् पशु हमेशा रोगवाहक की तरह कार्य करता है।

अन्तरीय/भेदकर निदान –

- **ट्राईकोमोनियेसिस** – इस रोग में मादा पशु मे शुरू के दो से चार महीनों में गर्भपात होता हैं जो कि ट्राईकोमोनास फीटस नामक प्रोटोजोआ परजीवी से होता है। लेप्टोस्पाइरोसिस – गाय भैंसों मे इस रोग में गर्भपात तो छः महीने के बाद ही होता है लेकिन प्रयोगशाला जांच द्वारा मूत्र तथा रक्त में इस जीवाणु की पुष्टि हो जाती है।

शेष पृष्ठ 5 पर...

पृष्ठ 4 का शेष ..... बुसेल्लोसिस

लिस्टीरियोसिस – इस रोग में गर्भपात सात महीने के पश्चात् होता है। प्रयोगशाला जांच द्वारा रोगी पशु में इस जीवाणु की पुष्टि हो जाती है जो कि लिस्टीरिया मोनोसाइटोजीन्स नामक जीवाणु से होता है। विब्रीयोसिस – यह रोग केम्फाइलोबेक्टर फीटस नामक जीवाणु से होता है। इस रोग में मादा पशु में पांच से छः महीने में गर्भपात होता है। ज़ेर में पिन के बिंदु के समान रक्त स्त्राव तथा सूजन उपस्थित होती है। माइकोटिक गर्भपात – यह रोग ऐस्परज़िलस तथा एबसिडीया कवक की प्रजाति से होता है। इस रोग में दो से सात महीने के बीच गर्भपात होता है।

उपचार- इस रोग का कोई भी प्रभावी इलाज़ नहीं है जो कि रोगी पशुओं को इस रोग से निजात दिला सके। कुछ प्रतिजैविक औषधियों जैसे कि क्लोरटेट्रासाईक्लीन, पेनिसिलिन, रिफामपिसिन, जेंटामाईसिन, स्ट्रेप्टोमाईसिन, ओक्सीटेट्रासाईक्लीन उपयोग में ली जाती है। हमें एक ही प्रतिजैविक औषधी को लम्बे समय तक उपयोग में लेना चाहिये क्योंकि ये जीवाणु कोशिका के अंदर ही रहता है। मनुष्यों में इलाज के लिये प्रतिदिन स्ट्रेप्टोमाईसिन को एक ग्राम, चौदह दिनों के लिये, मांस में सुईं लगवाना तथा डोक्सीसाईक्लीन सौ मिलीग्राम दिन में दो बार मुंह से लगातार पैंतालीस दिनो के लिये दी जाती हैं। हालांकि अलग – अलग संयोग में दी जाती है। लगभग दस प्रतिशत रोगियों में यह रोग दुबारा भी हो सकता है तथा ऐसी स्थिति में योग्य चिकित्सक से पूरा इलाज पुनः करवाना चाहिए।

रोकथाम एवं बचाव – सभी बछड़े जो कि चार से आठ महीने के हैं, उनका टीकाकरण कराना चाहिये। इस रोग को जड़ से खत्म करने का मुख्य कदम पशु के रोग के जांच की पुष्टि होने के बाद रोगी पशु का वध है, लेकिन भारत में यह गौवंश में संभव नहीं है। इसलिए रोगी पशु को स्वच्छ पशुओं से पूरी तरह से अलग कर गौसदन या अन्य गौसेवा स्थलों पर स्थानांतरित कर देना चाहिए। गर्भपात हुए शिशु, गर्भाशय के स्त्राव तथा जेर को गहरे गड्ढ़े में निष्कासित करना चाहिए जो कि आम आदमी तथा जानवरों की पहुँच से दूर हो। संक्रमित बाढ़ा, चारा, वस्तु को पूरी तरह से साफ तथा संक्रमण रहित करना अत्यन्त आवश्यक कदम है। नये पशुओं को खरीदने से पहले उनकी पूरी तरह से रोग जांच कर लेनी चाहिए। पशु को हमेंशा साफ तथा स्वच्छ जगह पर ही प्रसव कराना चाहिए।

- डॉ. नजीर मोहम्मद, डॉ. प्रेरणा नाथावत एवं प्रो. (डॉ.) ए. के. कटारिया (मो. 09460073909)

गायों में दूध बढ़ाने के लिए श्रेष्ठ प्रजनक सांड का चयन कैसे करें

राठी नस्ल का सांड

वर्तमान समय में गौवंश की कृषि कार्यो में उपयोगिता कम होने लगी है तथा दुग्ध उत्पादन में वृद्धि मुख्य लक्ष्य बन गया हैं। उत्तम खान–पान व स्वास्थ्य प्रबन्धन की तरफ तो सभी पशुपालक ध्यान देने लगे हैं, परन्तु गौवंश में प्रजनन के लिए या तो कृत्रिम गर्भाधान पर निर्भर रहना पड़ता है या फिर पंचायती या व्यक्तिगत, वाणिज्य आधार पर बंधेल सांड द्वारा प्रजनन कराया जाता है, क्योंकि पशुपालक अपने स्तर पर होने वाले व्यय को वहन नही कर पाते।

प्रजनक सांड का एक शुद्ध नस्ल के लक्षणों, गुणों व दुग्ध उत्पादन माप दण्डों पर खरा होना तथा उसमें कुलीनता व भरपूर प्रजनक क्षमता का होना अति आवश्यक है। अधिकतर पंचायती, व्यक्तिगत या संस्थागत स्तर पर एक प्रजनक सांड खरीदने वाले व्यक्तियों/अधिकारियों को वांछित उत्तम गौ नस्ल के लक्षणों की पहचान होती है, और वे प्रजनक सांड की जननी, बहनों व अन्य निकटतम सम्बन्धियों की दुग्ध उत्पादन क्षमता का आंकलन कर लेते है। परन्तु यह सारा ज्ञान तब व्यर्थ चला जाता हैं जब उनके द्वारा चयनित/खरीदे गये सांड द्वारा गायें ग्याभिन नहीं होती । ऐसे सांडों से भरपूर मात्रा में वीर्य का संग्रहण व स्वस्थ शुक्राणुओं का उत्पादन नहीं हो पाता। अतः एक उत्तम प्रजनक सांड का चयन करते समय इन बातों को ध्यान में रखें –

प्रजनक सांड के सिर, चेहरे तथा गर्दन के बाल मोटे होने चाहिए। यह पाया गया है कि ऐसे मोटे बाल यदि घुंघराले हो तो ऐसे प्रजनक सांड सर्वोत्तम होंगें, यदि लहराते हुए हो तो अति उत्तम होंगें और यदि सीधे हो तो उत्तम होंगें। घुंघराले, लहराते व सीधे मोटे बालों वाले प्रजनक सांडों से प्रजनक मौसम में गर्भवती होने वाली गायों का अनुपात क्रमशः 80–90, 75–85 तथा 70–80 प्रतिशत होगा। प्रजनक सांड के सिर, गर्दन तथा कंधो की त्वचा मोटी होने के साथ साथ ढ़ीली व गतिशील होनी चाहिए। ऐसी त्वचा में गर्दन पर ऊपर से नीचे की तरफ गहरी सलवटें भी होगी। प्रजनक सांड की गर्दन छोटी हो तथा उस पर भारी शिखर नजर आना चाहिए। अविकसित शिखर वाली गर्दन होने पर प्रायः वृषण (अण्डकोष) अविकसित होते हैं। दोनों कंधे विकसित और ऊँचे होने चाहिए।

शेष पृष्ठ 6 पर .....

विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर शोध कार्य

गायों में कोलाईबेसिलोसिस द्वारा रोग

कोलाईबेसिलोसिस गायों/गाय बछड़ों के अत्यधिक महत्वपूर्ण रोगों मे से एक है। इसलिए गायों में कोलाईबेसिलोसिस का आपात एवं व्याधिकी ज्ञात करने हेतु वर्तमान अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में राजस्थान में गायों में 22.61 प्रतिशत कोलाईबेसिलोसिस की आपात का घटित होना पाया गया। कुल 145 ऊतक नमूनों से ईशकरिश्चिया कोलाई सूक्ष्मजीवाणु अलग किये गये। जो निम्न प्रकार से हैः आंत से 32 (41.02%) फेंफड़ों से 19 (24.43%), वृक्क से 25 (32.05%), यकृत से 17 (21.79%), हृदय से 11 (14.10%), तिल्ली से 16 (20.51%) व लिम्फ नोड्स से 25 (32.05%)।

बाहरी तौर पर कन्जेसन व हेमोरेजेज आहारनाल, फेफड़ें, हृदय, वृक्क, यकृत व तिल्ली में पाये गये। आहारनाल में म्यूसिनस एग्जुडेट मुख्यतया पाया गया। कुछ परिस्थितियों में यकृत व फेफड़ों पर सफेद परिगलित फोकाई देखे गये। सूक्ष्मदर्शीय परिवर्तन में हिमोरजिक एन्टेराइटिस, जाम कोशिकाओं को हाइपरप्लेसिया, विलाई की उपकला का डिजनरेशन व डिस्क्वमेशन आंत में देखे गये। फेफड़ों में कन्जेसन, हेमोरेजेज, मोटे एल्वयोलर सेप्टा व ब्रोंकियोलर उपकला का हाइपरप्लेसिया देखा गया। यकृत, वृक्क, हृदय व आंत की म्यूकोसा में अधःपतन परिगलन देखा गया। इसके साथ ही चौड़ी व कंजेशट्ड् हिपेटिक साइनोसाइड्स व तिल्ली व लिम्फनोड्स में लिम्फोसाइट की कमी पायी गयी। शोध कार्य का निर्देशन प्रो. हेमन्त दाधीच ने किया।

डॉ. मनीषा मेहरा, स्नात्तकोत्तर शोधार्थी (मो. 9462563830)

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान-नवम्बर 2013

पशु रोग	पशु प्रकार	क्षेत्र
एम्फीस्टोमिओसिस (Amphistomiosis)	गाय, भैंस	कोटा, धौलपुर, उदयपुर, भरतपुर
फेसियोलियोसिस (Fascioliosis)	भैस, गाय, भेड़, बकरी	कोटा, धौलपुर, डूंगरगढ़, भरतपुर, हनुमानगढ़
हेमरेजिक सेप्टिसिमिया (गलघोंटू) (Haemorrhagic Septicemia)	भैंस, गाय	जयपुर, भीलवाड़ा
मूंह–खुरपका रोग (F.M.D.)	गाय, भैंस	धौलपुर, सवाई माधोपुर, जैसलमेर
बबेसियोसिस (Babesiosis)	गाय, घोड़ा	धौलपुर, बीकानेर
सी.सी.पी.पी. (CCPP)	बकरी	धौलपुर
सालमोनेलोसिस (Salmonelosis)	ऊँट	बीकानेर
छोटी माता (Pox)	ऊँट	बीकानेर

इसके अतिरिक्त मुर्गियों में गमबोरो रोग, दीर्घ श्वसन रोग, कोक्सीडियासिस (खूनी दस्त) गोल एवं फीता–कृमि, कोराइजा, एविएन ल्यूकॉसिस काम्पलेक्स, कोलिबेसिलोसिस (सफेद दस्त) आदि रोगों की सम्भावना है। मुर्गी पालकों से निवेदन है कि इस संबंध में विस्तृत जानकारी विशेषज्ञों से प्राप्त कर लें। विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करे – डॉ. बी.के. बेनीवाल, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, डॉ. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग एवं डॉ. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास, बीकानेर । फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183

प्रजनक सांड का चयन शेष पृष्ठ 5 का .....

कंधो की हड्डी का सिरा रीढ़ की हड्डी से आधा ईंच ऊपर ढ़ीला व लचीला होने के साथ साथ घूमता नजर आना चाहिए। प्रजनक सांड की कूबड़ **(Hump)** पूरी तरह विकसित होनी चाहिए। वह लचीली व चलायमान दिखनी चाहिए। दोनों वृषण एक ही माप, आकार, लम्बाई व खिंचाव के होने चाहिए तथा इन्हें सुरक्षित रखने वाले चमड़े की थैली हिरन जैसी मुलायम, नंगी व पतली त्वचा वाली होनी चाहिए। इस थैली की त्वचा पर पतले व अति सूक्ष्म रेशमी बालों के अतिरिक्त कुछ नहीं होना चाहिए। दोनों वृषणों के तल में पूर्ण विकसित व दृढ़ अधिवृषण होने चाहिए। दोनों वृषणों का आकार एक छोटी फुटबाल के आकार का होना चाहिए। वृषणों के उपरोक्त प्रकार का होना अति आवश्यक है तथा उनमें किसी भी प्रकार की कुरूपता, अधःपतन शारीरिक या सरंचनात्मक दोष नहीं होने चाहिए। प्रजनक सांड की पूँछ अच्छी मोटी होनी चाहिए तथा पूँछ के बाल भी सिर पर बालों की भाँति मोटे होने चाहिए। पूँछ के अन्तिम सिरे पर बालों का गुच्छा मोटा तथा परिप्यूस के बालों की भाँति गहरे रंग के होने चाहिए। प्रजनक क्षमता में कमी तथा टेस्टास्टीरोन व शुक्राणु उत्पादन में क्षीणता होने पर शिखर (Poll) के बाल घुंघराले होने की बजाय सीधे होने लगते है, ऐसा होने में 2 सप्ताह से 6 माह का समय लग सकता है। अतः यह अवश्य देखे कि शिखर के बाल सीधे खड़े न रहे, वे न तो रेशमी हों तथा न ही महीन हों।

– प्रो. एस. बी. एस. यादव (मो. 09828063132)

।। कोई व्यक्ति अपने कार्यो से महान होता है, अपने जन्म से नहीं ।।

मुख्य समाचार

राजुवास एवं एन.ए.वी.एस. द्वारा देश के वेटेरनरी कुलपतियों की राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित

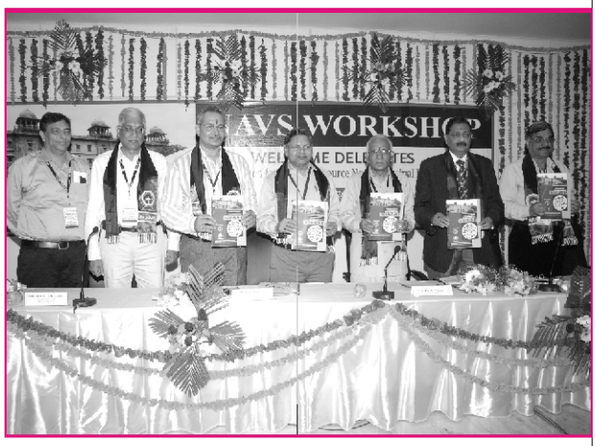

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय बीकानेर एवं राष्ट्रीय पशु चिकित्सा विज्ञान अकादमी नई दिल्ली के तत्वावधान मे जयपुर में देश के कुलपतियों और पशु चिकित्सा विशेषज्ञों की दो दिवसीय कार्यशाला 28 व 29 सितम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय बागवानी नवाचार व प्रशिक्षण केन्द्र, दुर्गापुरा में आयोजित की गई। ''पशुपालन में मानव संसाधनों की जरूरत के लिए पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान की शिक्षा'' विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला में आई.सी.आर. के उपमहानिदेशक (शिक्षा) डॉ. अरविंद कुमार, भारतीय पशु चिकित्सा परिषद्के अध्यक्ष ले. जनरल (सेवानिवृत) डॉ. नारायण मोहन्ती, आई. सी. ए. आर. के उपमहानिदेशक (पशु विज्ञान) प्रो. के. एम. एल. पाठक, राष्ट्रीय पशु चिकित्सा विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष प्रो. एम. पी. यादव, सहित कुलपतियों और पशु चिकित्सा महाविद्यालयों के 32 अधिष्ठाताओं और विशेषज्ञों ने भाग लिया। कार्यशाला की अध्यक्षता वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए. के. गहलोत ने की। उदघाटन सत्र में अतिथियों ने कहा कि देश के 65 प्रतिशत कृषि विश्वविद्यालयो में से सिर्फ 12 पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय है। इनसें 55 महाविद्यालय सम्बंधित है। देश में 80 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या के पास आधा एकड़ से भी कम भूमि है। पशु चिकित्सा में प्रतिवर्ष 3000 प्रशिक्षित संसाधन तैयार हो रहें है। इन सब के सुदृढ़ीकरण की आवश्यकता है। वर्तमान में 13000 पशुओं पर एक पशु चिकित्सक कार्य कर रहा है। पशुपालन में मानव संसाधन एक महत्ती आवश्यकता रहेगी। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की प्रदर्शनी और अन्य संस्थानों के स्टॉल प्रदर्शित किए गए।

कुलपति प्रो. गहलोत का आई.सी.ए.आर.की कमेटी में मनोनयन

बीकानेर। भारतीय कृषि अनुसधांन परिषद, नई दिल्ली ने राष्ट्रीय कृषि शिक्षा परियोजनाओं के परिचालन के लिए दिशा–निर्देश तैयार करने के लिए गठित समिति में वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत को सदस्य बनाया हैं। प्रो. गहलोत देश के वेटरनरी विश्वविद्यालयों में से एक मात्र प्रतिनिधि के रूप में होंगे। समिति देश में कृषि शिक्षा के विकास और सुदृढ़ीकरण के लिए अपनी सिफारिशें देगी। समिति को राष्ट्रीय कृषि शिक्षा परियोजना के विभिन्न घटकों के लिए दिशा–निर्देश तैयार करने को कहा गया हैं। कृषि विश्वविद्यालयो के लिए ई–गर्वनेन्स, मानव संसाधन की ईस्वी 2050 तक की जरूरतों, विश्वविद्यालयों को राष्ट्रीय–अर्न्तराष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षण, वैज्ञानिक आदान–प्रदान और संकाय को ग्लोबल स्तर का बनाए जाने के लिए भी सिफारिशें तैयार करेगी। समिति छात्रों के चहुँमुखी शैक्षणिक विकास, मॉडल कृषि शिक्षा और सम्बद्ध विषयों में एक्सीलेंस केन्द्रों, देश के पिछड़े, जनजातीय और पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि महाविद्यालय खोलने, कृषकों, ग्रामीण महिलाओं और उद्यमियों के लिए अनौपचारिक शिक्षा के उपायों को सुझाएगी।

राष्ट्रीय सलाहकार समिति में नामित

उत्तर प्रदेश सरकार के पशुपालन विभाग द्वारा लखनऊ में आगामी 13–15 दिसम्बर 2014 को ''उन्नत पशु स्वास्थ्य और पोषण से उत्पादन बढ़ाने'' विषय पर आयोजित होने वाली राष्ट्रीय कार्यशाला की राष्ट्रीय समिति में वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत को सदस्य नामित किया गया हैं।

दो दिवसीय पुस्तक मेला सम्पन्न

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय के फैकल्टी हाऊस में दो दिवसीय पुस्तक मेला सम्पन्न हो गया। मेले में दिल्ली, जोधपुर और बीकानेर के प्रकाशन समूह और पुस्तक विक्रेताओं द्वारा पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान सहित सम्बद्ध विषयों पर प्रकाशित ताजा–तरीन पुस्तकों को प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी में पशुचिकित्सा की विभिन्न विधाओं के साथ ही डेयरी, पशुधन संपदा का प्रबंधन, प्रसार शिक्षा तकनीक, चारे के उत्पादन और प्रबंधन, पशुपोषण और पशुधन उत्पादों के मूल्य संबर्द्धन से सम्बद्ध नवीन प्रकाशनों की सैंकडों पुस्तकें रखी गई।

इन्टरनेशनल बफेलो फैडरेशन में प्रतिनिधित्व मिला

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय बीकानेर को इन्टरनेशनल बफेलो (भैंस) फैडरेशन, रोम (इटली) में भारत के ऑफिसियल डेलीगेट के रूप में प्रतिनिधित्व मिला है। विश्वविद्यालय के पशु मादा एवं प्रसूति रोग विभाग के प्रो. गोविंद नारायण पुरोहित को 4 वर्ष के लिए प्रतिनिधि सदस्य नियुक्त किया गया है।

सफलता की कहानी

समन्वित खेती को नफे की खेती बनाकर समृद्ध हुआ लालसिंह

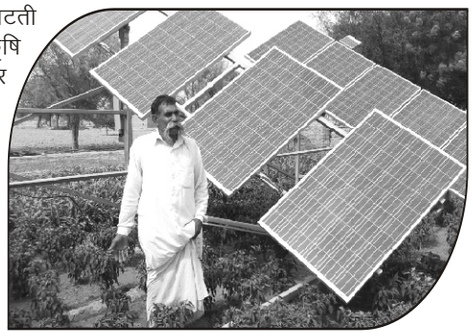

बढ़ती जनसंख्या और घटती कृषि जोत के कारण कृषि उत्पादन पर विपरीत असर हो रहा है। मुनाफे की खेती मे कमी हो जाने से गांवों से रोजगार की तलाश मे लोग शहरों की ओर पलायन कर रहें है। इन परिस्थितियों के बावजूद एक किसान ने कृषि के साथ पशुपालन का समन्वयन करके अपनी मेहनत के बूते अपने आप को समृद्ध बना लिया। गांव परतीया (नोहर) जिला हनुमानगढ़ के प्रगतिशील कृषक लालसिंह बेनीवाल ने समन्वित कृषि अपनाकर अपनी अलग पहचान बनाई है जो किसानों के लिए एक मिसाल बन गई है।

बेनीवाल के पास 6 हैक्टेयर कृषि योग्य भूमि है। 8वीं कक्षा तक पढ़ाई के बाद ही इन्होने खेती की पूरी तरह जिम्मेदारी सम्भाल ली। भूमिगत जल की समस्या को देखते हुए सबसे पहले खेत में डिग्गी का निर्माण करवाया और ड्रिप सिंचाई संयंत्र स्थापित किया। कुछ नया करने की सोचकर खेत में समन्वित कृषि को अपनाया जिसमें फसल उत्पादन के साथ ही सब्जी उत्पादन, पशुपालन के लिए उत्तम चारे वाली फसलें आदि कों शामिल कर पशुधन को भी महत्व दिया। परम्परागत फसलों मे गेहूँ, जौ, चना, सरसों व कपास इन्यादि की फसल से सालाना ढाई से तीन लाख की आमदनी इन्हें मिल जाती है लेकिन सब्जी उत्पादन से वे सालाना 6–7 लाख रूपये की आमदनी उठाते है। जिनमें प्रमुख रूप से वे मिर्च, टिण्डा, घीया, टमाटर, गोभी, लहसुन, मटर, आदि का उत्पादन लो – टनल के अन्दर लेते है। लो –टनल से तेज सर्दी से होने वाला नुकसान कम होता है। बेनीवाल ने प्रति बीधा 3 लाख रूपये मिर्च से तथा एक बीधा 55 हजार रूपये हरे चने का विपणन कर आमदनी प्राप्त की है।

पशुपालन के लिऐ 5 जर्सी नस्ल गाय, 2 एच एफ गाय व 2 मुर्रा भैंस उनके पास है जिनका प्रतिदिन 30–40 लीटर उत्पादन कर प्रतिमाह 15–20 हजार रूपये की आमदनी कमा रहें हैं और साथ ही उत्तम किस्म के चारे का उत्पादन करके सालाना एक लाख रूपये की आमदनी कर लेते है।

लालसिंह नोहर के कृषि विज्ञान केन्द्र से संपर्क में रहकर विभिन्न तकनीकी जानकारी प्राप्त करके कृषि में निरंतर विविधिकरण लाते रहते है। वे केन्द्र के माध्यम से पशुपालन के तौर तरीकों का प्रशिक्षण और अन्य स्थानों का भ्रमण करके नया सीखते रहते है। गांव के अन्य कृषकों को भी पशुपालन और खेती के समन्वय के लिए प्रेरित करते रहते हैं। बेनीवाल के इन प्रयासों से नफे की खेती होने लगी और दिन – प्रतिदिन उनकी आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ हो गई। आज वे अन्य कृषकों के आकर्षण के प्रमुख केन्द्र बने हुए है (लाल सिंह बेनीवाल – मो. 09024850132)।

निदेशक की कलम से.....

प्रिय पशुपालक भाइयों,

भैंस एक प्रमुख दुग्ध उत्पादक पशु है। अज्ञानतावश प्रजनन संबंधी विकारों की समझ के अभाव में पशुपालकों को भारी नुकसान उठाना पड़ता है। नियमित प्रजनन करवा कर ही पूरा दूग्ध उत्पादन लिया जा सकता है। साधारणतः पाडी पहली बार साढ़े चार – पांच वर्ष की आयु मे बच्चा देती है। पशुपालको में भ्रांति है कि जब तक भैंस दूध देती है ग्याभिन नहीं करवाया जाता कि यह दूध देना बंद कर देगी। ब्याहने के बाद समय पर मद में नहीं आ रही या मद में आने के लक्षण ठीक से प्रकट नहीं हो पाते और पाडे के अभाव में प्रजनन नहीं हो पाता। इन सभी कठिनाईयों से बचने के लिए पाडी को कम उम्र में ही पौष्टिक आहार खिलाने से उसका वजन ढ़ाई से तीन सौ किलोग्राम के बीच तीन वर्ष की आयु के पूर्व तक ही हो जाता है। ऐसी स्थिति में वह ग्याभिन हो जाती है। दूध सूख जाने की बात एक भ्रम है अतः ब्याहने के 80 दिन बाद ही उसे मद मे आने पर ग्याभिन कराया जा सकता है। हकीकत में ब्याहने के डेढ़ माह बाद ही भैंस मद मे आने लगती है लेकिन उस समय 2–3 मद काल खाली छोड़ देना चाहिए। दुधारू भैंस मे मद मे आने पर आहार मे दाने की मात्रा बढ़ा देनी चाहिए। इससे मदकाल मे आहार कम लेने पर भी पशु की पौष्टिक तत्वों की आवश्यकता पूरी की जा सकें। भैंस के ठण्ड़े होवे में आने तथा मद मे होने के लक्षणों के कमजोर दिखने का मतलब है मदकाल का निकल जाना या फिर ग्याभिन करवाने के लिए ले जाने तक इतना समय गुजर चुका होता है कि गर्भ ठहरने की आशा कम हो जाती है। इससे बचने के लिए खास लक्षणों की पहचान करनी चाहिए जैसे भैंस का रूक रूक कर गहरे पीले रंग का पेशाब करना तथा पूंछ उठाए रखना और तीव्रता से इधर उधर हिलाना। भैंस के योनि मार्ग से पारदर्शक लिसलिसा व चिपचिपा पदार्थ बहते रहना, योनि मार्ग का सामान्य की अपेक्षा सूजन आ जाना तथा लाल हो जाना। योनि का चिपचिपापन तथा यह चिपचिपा पदार्थ कई बार पूंछ पर लग जाना आदि है। मद के लक्षण सांय 6 बजे से 10 बजे तक व प्रातः 2 से 6 बजे के समय मे अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट होते है। ऐसे में यदि भैंस प्रातःकाल मद मे आती है तो उसीदिन सांय तक गर्भाधान करवा देना चाहिए और यदि भैंस सांय के समय मद मे आए तो दूसरे दिन प्रातःकाल में गर्भाधान करवाना चाहिए। संभवतः दो बार गर्भाधान 12 घंटे के अंतराल से कराना चाहिए।

शुभकामनाओं सहित।

प्रो. (डॉ.) चन्द्रेश कुमार मुरड़िया
प्रसार शिक्षा निदेशक

नवाचार – समाचार भेज सकते हैं

पशुपालक भाईयों एवं पशुचिकित्सा व्यवसाय से जुड़े बंधुओं से अनुरोध है कि पशुपालन के क्षेत्र में कोई नवाचार - समाचार हो तो फोटोग्राफ सहित भिजवा सकते हैं। उपयुक्त पाए जाने पर प्रकाशित किया जाएगा

- संपादक

प्रधान संपादक
प्रो. सी. के. मुरड़िया

सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना

संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505

भारत सरकार की सेवार्थ बुक पोस्ट

सेवामें

.....

.....

.....

संपादक, प्रकाशक और मुद्रक सी. के. मुरड़िया के लिए प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर से प्रकाशित और डायमंड प्रिंटर्स एण्ड स्टेशनरी नत्थूसर गेट बीकानेर से मुद्रित